4

''यहां अजगर होंगे!''

मनुष्य द्वारा संसार का मानचित्र बनाना आर भ करने तक पृथ्वी के अधिकतर भागों की खोज नहीं हुई थी। इन आर भक नक्शा बनाने वालों के लिए अज्ञात क्षेत्र निषेधित और खतरनाक थे, जिनमें खतरनाक काल्पनिक जीवों की भरमार थी। मुझे एक गुमनाम क्षेत्र की ओर तीर के निशान वाले एक प्राचीन मानचित्र की तस्वीर याद है, जिस पर लिखा हुआ था ''यहां अजगर होंगे!''[1]

बहुत से लोगों के लिए प्रकाशितवाक्य की पुस्तक अज्ञात क्षेत्र है और वे इसे वैसे ही भय और क पक पी के साथ देखते हैं, जैसे आर भक नक्शा बनाने वाले देखते थे। आज के कायर खोजी सच्चाई से यह भी कह सकते हैं, ''यहां अजगर होगा!'' प्रकाशितवाक्य के केन्द्र में हम ''एक बड़ा लाल अजगर, जिस के सात सिर और दस सींग थे'' के विषय में पढ़ते हैं (12:3)। अजगर के अलावा, पुस्तक के प्राकृतिक दृश्य में आगे-पीछे आंखों वाले पंखदार प्राणी (4:6-8), बिच्छुओं जैसी पूछों वाली टिड्डियां (9:3-11), सात सिरों वाले भयानक जीव (13:1, 2), और मेंढकों जैसी लगने वाली तीन अशुद्ध आत्माएं (16:13, 14) अन्य अजीब और अनोखे जीव वहां घूमते हैं! इन अजीब जीवों के साथ पुस्तक की अन्य रहस्यमयी आकृतियां भयभीत यात्री के लिए प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के परिदृश्य को अशुभ बना सकती हैं।

इस और अगले पाठ का उद्देश्य आपको इस अपरिचित आकृति से रू-ब-रू कराना है। सामान्य प्रतीकों तथा प्रकाशितवाक्य के प्रतीकों को हम विशेष रूप से देखेंगे।

प्रतीक क्या हैं?

''प्रतीक'' के लिए अंग्रेज़ी शब्द symbol उस मिश्रित यूनानी शब्द का संज्ञा रूप है, जिससे *sun*[2] (''के साथ'') और *ballo* (''फैंकना'') मिलते हैं। ''सि बल'' का मूल अर्थ है ''के साथ फैंका गया।'' ''सि बल'' शब्द साकार और अमूर्त, दो अवधारणाओं को दिखाता है। दोनों ही किसी अवधारणा को देने के लिए ''इकट्ठे फैंकना'' है।[3] शब्दकोष के अनुसार प्रतीक का अर्थ ''सहयोग, अनुरूपता, या कथा, विशेषकर किसी अदृश्य को दर्शाने के लिए इस्तेमाल की गई भौतिक वस्तु है।''[4]

लोगों का वास्ता निरन्तर प्रतीकों से पड़ता है। खोपड़ी के साथ हड्डियों की तस्वीर वाली बोतल को पकड़कर हमें मालूम होता है कि बोतल में ज़हर है, जिस कारण हम उसे बच्चों की पहुंच से दूर रखते हैं। खोपड़ी और हड्डियां ज़हर की *तस्वीर* नहीं हैं; बल्कि वे

ज़हर का *प्रतीक* हैं। अमेरिका में स पादकीय कार्टूनों में आम तौर पर हाथी और गधे को दिखाया जाता है।[5] हाथी रिपब्लिकन राजनैतिक पार्टी को, जबकि गधा डेमोक्रेटिक पार्टी को दर्शाता है।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में जीवन के हर क्षेत्र से प्रतीकों की भरमार है। प्रकाशितवाक्य को समझने के लिए हमें यह समझना आवश्यक है कि ये प्रतीक ''सहयोग या अनुरूपता के द्वारा किसी चीज़ को दर्शाते हैं।'' दिखाई देने वाली वस्तुओं का इस्तेमाल अदृश्य सच्चाइयों को दर्शाने के लिए किया जाएगा।

प्रकाशितवाक्य की *हर बात* सांकेतिक नहीं है। 1:4 का उल्लेख करते हुए यूहन्ना ने यूहन्ना नामक एक वास्तविक व्यक्ति की बात की, न कि किसी ''अदृश्य अवधारणा'' की। परमेश्वर, मसीह और पवित्र आत्मा के हवाले (1:1, 4, 5) परमेश्वरत्व के सदस्यों की बात हैं, न कि कोई ऐसी गुप्त सच्चाई जिसका हमें पता लगाना है। फिर तो प्रकाशितवाक्य एक मिली-जुली प्रतीकात्मक और मूल भाषा है। अपोकलिप्टिक साहित्य होने के कारण पुस्तक की प्रतीकात्मक भाषा *प्रबल* है।

हमें प्रतीकों का अर्थ कैसे पता चल सकता है?

प्रकाशितवाक्य के आर भक पाठक ''अपोकलिप्टिक लेख का स मान करते और कुछ भीतरी नियमों को समझते थे, जिन्हें ऐसी पुस्तक पढ़ने वाले को मानना आवश्यक है।''[6] उन ''नियमों'' के बारे में मैं अपने कुछ विचार देता हूं:

स भवतया माने जाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत यह है कि *समझ लें कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक अपना संदेश प्रतीकों के द्वारा देती और उसी के अनुसार इसकी व्या या करती है।* इसका अर्थ यह हुआ कि प्रकाशितवाक्य की अधिकतर भाषा सांकेतिक है, इसलिए ''हमें इसे पढ़ते समय व्या या के सामान्य नियम के उलट करना होगा।''[7]

> आम तौर पर पवित्र शास्त्र के किसी वचन के शब्दों को उनके स्पष्ट और स्वाभाविक अर्थ में समझा जाना चाहिए, जब तक उन्हें प्रतीकात्मक अर्थ में लेने का कोई कारण न हो।[8] स भावना हमेशा मूल अर्थ के पक्ष में ही रहती है; यदि कोई इसका अर्थ अलग लगाता है तो उसके लिए उसका कारण बताना आवश्यक है। प्रकाशितवाक्य में ऐसी कोई बात नहीं है। इस पुस्तक के चित्रात्मक रूप को देखते हुए यह मानना आवश्यक है कि संकेतों को प्रतीकात्मक अर्थ में लिया जाए जब तक उन्हें मूल अर्थ में लेने का कोई ठोस कारण न हो।[9]

जब मैं लड़का था तो एक बात इस्तेमाल की जाती थी कि ''वचन में जो कहा गया है वही उसका अर्थ होता है और जो उसका अर्थ होता है, वही कहा गया होता है।'' वो दर्शन-शास्त्र मूल भाषा के साथ बहुत काम करता है और बाइबल का अधिकांश भाग मूल भाषा में ही लिखा गया है। परन्तु यह प्रतीकात्मक भाषा के साथ मेल नहीं खाती। सांकेतिक भाषा का ''अर्थ वही'' *नहीं* ''होता जो इसमें कहा गया हो और इसमें वह कहा नहीं गया

होता जो इसका अर्थ होता है।''

यह समझ आ जाने पर कि ''संकेतों को प्रतीकात्मक अर्थ में लिया जाए'' हम प्रतीकात्मक अर्थ को ढूंढ़ने की चुनौती से लड़ने को तैयार होते हैं। हम ऐसा कैसे कर सकते हैं? कभी-कभी वचन स्वयं ही हमें संकेतों की व्या या करने में सहायता करता है।[10] उदाहरण के लिए हमें बताया गया है कि अध्याय 1 के सात दीवट आसिया की सात कलीसियाओं को दर्शाते हैं (1:12, 20) और धूप के सोने के कटोरे पवित्र लोगों की प्रार्थनाएं हैं (5:8)।

कई बार संदर्भ से भी सहायता मिलती है। उदाहरण के लिए अध्याय 1 में संदर्भ बताता है कि आयत 4 में ''सात आत्माएं'' पवित्र आत्मा को कहा गया है।[11]

फिर कभी-कभी हमें सामान्य रूप में अपोकलिप्टिक साहित्य में इस्तेमाल किए गए कुछ प्रतीकों के इस्तेमाल के ढंग को जानने से सहायता मिलती है। उदाहरण के लिए ऐसे साहित्य में सींग सामर्थ को दर्शाता है।

हमें एक और महत्वपूर्ण ढंग से सहायता मिल सकती है, वह ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से परिचित होना है। विलियम हैंड्रिक्सन ने लिखा है कि प्रकाशितवाक्य ''का *आधार* निश्चय ही समकालिक घटनाएं और परिस्थितियां हैं और उनकी व्या या उन्हें ध्यान में रखकर की जानी आवश्यक है।''[12] अगले पाठ में, मैं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के अपने अध्ययन को पूरा करने के लिए रोमी साम्राज्य के इतिहास की संक्षिप्त समीक्षा दूंगा।

हमारी सहायता के सबसे महत्वपूर्ण ढंगों में से एक पुराने नियम को जानना है। पुराने नियम के चार सौ से अधिक हवाले प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में मिलते हैं। अगले पाठ में मैं पुराने नियम के कई हवाले दूंगा और बताऊंगा कि वे प्रकाशितवाक्य में कहां हैं।

व्या या आर भ करने तक पहुंचकर, हमें हर यूनिटिक्स (वचन की व्या या) के मूल सिद्धांतों को लागू करना होगा। प्रतीकात्मक भाषा के स बन्ध में हमें दो मूल सिद्धांतों को मानना होगा। पहला उस *प्रतीक को उस बात से मिलाना है, जिसकी यह बात करता है।* ऐसा उस प्रतीक की विशेषताओं को देखकर और उसमें वर्णित व्यक्ति या वस्तु की विशेषताओं को देखकर और उनमें समानताओं पर ध्यान देकर किया जाता है। उदाहरण के लिए, लूका 13:32 में यीशु ने हेरोदेस को लोमड़ी कहा। लोमड़ी की विशेषताओं की तुलना हेरोदेस की विशेषताओं से करने पर ऐसा लगता है कि यीशु हेरोदेस की धूर्तता और मक्कारी की बात कर रहा था। इसी प्रकार प्रकाशितवाक्य 1 अध्याय में स्थानीय मण्डलियों को दीवट कहा गया है। उस समय के दीवटों के उद्देश्य और अंधेरे जगत को ज्योति देने के लिए मसीही लोगों को दी गई चुनौती पर विचार करने पर (मत्ती 5:14; फिलिप्पियों 2:15, 16), इसका उत्तर स्पष्ट हो जाता है कि कलीसिया को सच्चाई की रोशनी थामे रखने की ज़ि मेदारी दी गई है।[13]

प्रतीकात्मक भाषा के स बन्ध में दूसरा मूल सिद्धांत *प्रतीक पर अधिक बल देने से बचना* है। किसी ने कहा है ''गांठों के महत्व को न देखें।'' प्रतीक का इस्तेमाल आमतौर पर एक ही विचार के लिए किया जाता था; आम तौर पर हम यह ज़ोर देकर कि एक-एक

बिंदी का अर्थ निकाला जाए, उस प्रतीक के साथ अन्याय करते हैं। उदाहरण के लिए परमेश्वर के लोगों को भेड़ें कहा गया है (यूहन्ना 10:16), परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि मसीही लोगों पर ऊन लगी है और वे घास चरते हैं। प्रकाशितवाक्य के स बन्ध में इसी सामान्य समझ के ज्ञान की आवश्यकता है। रेअ समर्स ने ज़ोर दिया है कि ''कई विवरण नाटकीय प्रभाव वाले हैं और किसी आयत के सूक्ष्म अर्थ में नहीं जोड़े जाने चाहिए। दर्शन के विवरण का महत्व हो सकता है, परन्तु अधिकतर घटनाओं में उनका इस्तेमाल दृश्य को भरने के लिए ही किया जाता है।''[14]

एक समानता बनाते हैं: मान लो कि आप एक परेड देख रहे हैं। एक झांकी[15] निकलती है। यह फूलों से लदी है और इसके ऊपर ''उन्नति की आत्मा'' लिखा हुआ है। क्या आप हर गुलाब और हर छोटे-बड़े फूल का अर्थ पूछेंगे या हर फूल को ''उन्नति की आत्मा'' के विषय में योगदान देने वाला नहीं मानेंगे ? ऐसे ही प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को देखने पर हमें उसकी बारीकी में जाकर कुछ अधिक ही नुक्ताचीनी ढूंढ़ने के बजाय उसके संदेश को देखना चाहिए।

प्रत्येक दर्शन का अध्ययन करते हुए तीन चरणों में से गुज़रना आवश्यक है: (1) ''बड़ी तस्वीर'' अर्थात मूल संदेश को देखें; (2) यह देखने के लिए कि उस संदेश में कुछ और जोड़ा गया है, विस्तार में जाएं; (3) फिर ''बड़ी तस्वीर'' दोबारा से देखने के लिए पीछे आएं, ताकि वह आपकी नज़रों से ओझल न हो जाए।[16]

प्रतीकात्मक भाषा के हर यूनिटिक्स (व्या या के ढंगों) के *विशेष* नियमों के अलावा प्रकाशितवाक्य का अध्ययन करने के लिए हर यूनिटिक्स के *सामान्य* सिद्धांत ही लागू होते हैं।[17] उनमें से कुछ सिद्धांत जो आपको याद रखने चाहिए वे इस प्रकार हैं:

किसी अस्पष्ट पद के आधार पर भुरग्य शिक्षा न बनाएं। प्रकाशितवाक्य के किसी सांकेतिक पद पर आधरित किसी भी प्रमुख शिक्षा पर संदेह किया जाना चाहिए। इस सिद्धांत को तोड़ने के एक उदाहरण में यह शिक्षा है कि यीशु सांसारिक यरूशलेम में हज़ार वर्ष तक राज करेगा।

किसी प्रतीकात्मक वचन की व्या या कभी भी ऐसे न करें, जिससे यह किसी और जगह की स्पष्ट शिक्षा के विरोध में लगे। इस नियम के उल्लंघन का एक उदाहरण यहोवा विटनेस वालों की शिक्षा है कि केवल 1,44,000 लोग ही स्वर्ग में जाएंगे, जबकि बाकी विश्वासी लोग बहाल की गई पृथ्वी पर रहेंगे। यह 1 पतरस 1:3-5 तथा अन्य आयतों का उल्लंघन है, जो यह सिखाती हैं कि सभी विश्वासी स्वर्ग में जाएंगे। प्रतीकात्मक भाषा में मूल भाषा की सुन्दरता को बढ़ा सकती है, परन्तु यह अलग शिक्षा नहीं दे सकती। प्रकाशितवाक्य में ऐसी कोई डॉक्ट्रिन या शिक्षा नहीं है, जो नये नियम में कहीं और न मिलती हो। इस कारण प्रकाशितवाक्य की शिक्षा नये नियम की किसी भी और स्पष्ट शिक्षा के साथ मेल खाती होनी आवश्यक है।

एक और सामान्य सिद्धांत का प्रकाशितवाक्य के अध्ययन में विशेष महत्व है: *इस बात को समझें कि अलंकार का अर्थ बदल सकता है।* संकेत का अर्थ एक स्थिति में अलग

और दूसरी स्थिति में कोई और हो सकता है। उदाहरण के लिए लोगों को भेड़ें कहने के समय (यशायाह 53:6; 1 पतरस 2:25), परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखकों के मन में सामान्यतया भेड़ की कम अपेक्षित विशेषताएं थीं। दूसरी ओर जब यीशु की तुलना भेड़ से की गई (यशायाह 53:7; प्रेरितों 8:32; यूहन्ना 1:29 भी देखें; प्रकाशितवाक्य 5:6) तो लेखकों के मन में भेड़ों के अधिक अपेक्षित गुण थे।

व्या या के कुछ प्रबन्ध इस मान्यता पर आधारित हैं कि संकेत का अर्थ एक ही होता है, वह चाहे कहीं भी मिले और उसका संदर्भ चाहे कोई भी हो; पर यह गलत अवधारणा है। जैसा कि हम अगले पाठ में देखेंगे, पुराने नियम के किसी भी हवाले की तुलना प्रकाशितवाक्य में उसके पूरक से करने पर हमें ''घुमाव'' अर्थात एक बदलाव को देखना भी आवश्यक है, जो यह संकेत देता है कि अर्थ में भी ''घुमाव'' है। वचन का अध्ययन करते हुए हम देखेंगे कि कई बार तुलना या अन्तर करने के लिए एक जैसे संकेतों का इस्तेमाल किया जाता है। एक उदाहरण अध्याय 1 के सात दीवटों (कलीसियाओं) और अध्याय 4 के सात दीवटों (पवित्र आत्मा) का है। एक और उदाहरण 12 और 17 अध्यायों वाली दो स्त्रियों का है (एक पवित्र है और एक वेश्या)।

व्या या के अन्य सिद्धांतों पर भी ध्यान दिया जा सकता है, परन्तु अभी के लिए यही काफ़ी हैं। हमें चौकस रहना चाहिए कि कई बार दिए गए सभी सुझावों से अधिक सहायता नहीं मिलती। कई बार, यह मानना पड़ता है कि हमें किसी विशेष संकेत का अर्थ मालूम नहीं। ऐसा होने पर, ह्यूगो मेकोर्ड हमें याद दिलाते हैं कि ''गुप्त बातें हमारे परमेश्वर यहोवा के वश में हैं'' (व्यवस्थाविवरण 29:29) और हमें परमेश्वर के वचन से आगे निकल जाने या उसमें जोड़ने की बात से सावधान रहना चाहिए (1 कुरिन्थियों 4:6; प्रकाशितवाक्य 22:18, 19) और परमेश्वर के लोगों की एकता को भंग करने के लिए विचारों को कभी आड़े नहीं आने देना चाहिए (नीतिवचन 6:19; रोमियों 14:19, 22; इब्रानियों 13:1)।[18]

अलग-अलग प्रकार के कुछ संकेत क्या हैं?

प्रकाशितवाक्य में कई तरह के संकेतों का इस्तेमाल किया गया है, परन्तु उनमें से चार प्रबल हैं: (1) अंकों का इस्तेमाल सांकेतिक अर्थ में किया गया है, (2) पुराने नियम से संकेत, (3) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि वाले संकेत, और (4) प्रकाशितवाक्य से जुड़े संकेत। यह बताने के लिए कि संकेतों को कैसे समझा जा सकता है, हम इस पाठ में इन में से पहली श्रेणी का अध्ययन करेंगे। अगले पाठ में हम अन्य तीन की समीक्षा करेंगे।

प्रकाशितवाक्य के सबसे महत्वपूर्ण संकेतवाद शायद अंकों का इस्तेमाल है। समर्स ने यह टिप्पणी दी है:

> उस प्रारंभिक समय में, जब भाषा प्राथमिक अवस्था में और शब्द भण्डार अपर्याप्त था, एक इब्रानी शब्द को कई बार विभिन्न अर्थों का दायित्व निभाने को विवश किया जाता था। ऐसी परिस्थितियों में स्वाभाविक रूप में लोग अंकों का इस्तेमाल

> ऐसे करने लगे जैसे हम शब्दों का करते हैं। वे नैतिक या आत्मिक सच्चाई के संकेत थे। कोई विशेष अंक किसी विशेष अवधारणा का सुझाव देता था। ... ऐसे अंकों को मूल यथार्थता के साथ नहीं पढ़ा जा सकता, जिसे हम अंक गणित के फॉर्मूले की व्या या के समय लागू करें।[19]

(एक उदाहरण के लिए कि कोई अंक सांकेतिक महत्व पर कैसे प्रभावी हो सकता है, विचार करें कि कुछ लोग ''तेरह'' के अंक को अशुभ क्यों मानते हैं।[20])

यदि आप प्रकाशितवाक्य की पूरी पुस्तक पढ़ते हुए इसमें दिए गए सभी अंकों को लाल पैन से चिह्नित करें तो उसके पन्ने ऐसे लगेंगे जैसे कि उन्हें चेचक हुई हो।[21] प्रकाशितावक्य की पुस्तक पढ़ाते हुए मैं पुस्तक में पाए जाने वाले अलग-अलग अंकों की एक सूची रखता हूं। छात्र कई बार अभिभूत लगते हैं, फिर मैं जल्दी से यह ध्यान दिलाते हुए कि सं याओं के अधिकतर संकेत केवल *तीन* अंकों अर्थात ''तीन,'' ''चार'' और ''दस'' से लिए गए हैं, उनकी कुछ उलझन को दूर कर देता हूं।

अधिकतर लोगों द्वारा ''तीन'' के अंक को *ईश्वरीय* अंक माना जाता था। कुछ लोगों ने अनुमान लगाया है कि यह अवधारणा पिता, माता और बच्चे में प्रेम के साथ जुड़ी हुई थी। शायद यह ''त्रिएकता''[22] अर्थात पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की अवधारणा की आर भिक झलक भी थी। होमेर हेली ने कहा है, ''पूरे पवित्र शास्त्र में इसके इस्तेमाल पर विचार करते हुए तीन 'स पूर्ण और व्यवस्थित स पूर्ण का संकेत' मिलता है।''[23]

''चार,'' दूसरा मु य अंक है, जिसे ''वैश्विक अंक''[24] अर्थात *सृष्टि* का अंक माना जाता था। शायद यह उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम की चार दिशाओं के कारण था। प्रकाशितवाक्य में ''चार'' का इस्तेमाल आम तौर पर पूरी मनुष्य जाति के लिए हुआ है।

''दस'' पर आने से पहले, आइए ''सात'' (तीन जमा चार[25]) से आर भ करते हुए तीन और चार के मेल पर विचार करते हैं। प्रकाशितवाक्य का सरसरी पाठक भी ''सात'' अंक के बार-बार आने से परेशान हो जाएगा; पुस्तक में यह अंक तो पचास से अधिक बार आता है।[26] ''सात'' जो ''इब्रानियों के लिए सबसे पवित्र अंक''[27] था, *सिद्धता* को दर्शाता था। (ईश्वरीयता के साथ सृष्टि जोड़ने का अर्थ जो कुछ विद्यमान है।)

''बारह'' (तीन बार चार) एक और मेल है। पवित्र शास्त्र में ''बारह'' का इस्तेमाल बार-बार हुआ है: इस्राएल के बारह गोत्र, बारह प्रेरित और कई ऐसे उपयोग। ''बारह'' और इसका बारह गुणा (जैसे ''144'') प्रकाशितवाक्य में बार-बार मिलते हैं। बारह भी ईश्वरीयता और सृष्टि (जो कुछ विद्यमान है) के अंकों को मिलाता था, इसलिए इसमें *स पूर्णता* का विचार था। इब्रानी विचार में इसे आम तौर पर धार्मिक स पूर्णता से जोड़ा जाता था।

अब हम प्रकाशितवाक्य के तीसरे मु य अंक अर्थात ''दस'' के लिए तैयार हैं। ''दस'' भी *स पूर्णता,* परिपूर्णता या शक्ति को दर्शाता अंक था-स भवतया इस तथ्य से निकला कि एक व्यक्ति की दस उंगलियां होती हैं।[28] ''दस'' मनुष्यजाति से जुड़ा हुआ अंक था, इसलिए इस अंक में विशेष रूप से मनुष्यजाति की स पूर्णता का विचार था।

''दस'' को इसी से गुणा करने पर (100 या 1,000 बनाने के लिए),[29] इसका महत्व और भी बढ़ जाता था। ''दस'' से जुड़ा ''पांच'' (दस का आधा) अंक भी है। केवल एक हाथ की उंगलियों के अंक के रूप में, ''पांच'' का अर्थ सीमित सामर्थ या समय था।

एक अतिरिक्त मूल अंक ''एक'' का भी संक्षेप में उल्लेख करना आवश्यक है। ''एक'' अंक में एकता का विचार है (देखें 17:13); परन्तु प्रकाशितवाक्य में इसका इस्तेमाल मु यतया ''एक घण्टे'' के लिए किया गया है, जो अकेले खड़े होने का संकेत है और इस प्रकार यह तुलनात्मक रूप से निर्बल है। (''एक घण्टा'' शीघ्र बीत जाने वाले थोड़े समय का संकेत है)। हमारे अध्ययन के लिए अधिक महत्व एक का दोगुना अर्थात *दो* करना है। ''दो'' *मज़बूत करने* का अंक है (देखें सभोपदेशक 4:9-11; व्यवस्थाविवरण 17:6; 19:15; लूका 10:1)। हम दो गवाहों के बारे में पढ़ेंगे (11:3) और दो से गुणा किए जाने पर अन्य अंकों के मज़बूत होने को भी देखेंगे।

प्रकाशितवाक्य के बाकी अधिकतर अंक मु यतया पहले चर्चा किए गए अकों का मिश्रण ही हैं, परन्तु पूरी सूची देने से पहले हमें सबसे महत्वपूर्ण अंक ''सात'' पर लौट कर इस अंक की कुछ व्युत्पत्तियों पर विचार करना आवश्यक है।[30] उदाहरण के लिए ''छह'' अंक को देखें। छह सात से एक अंक छोटा है; ''सात'' पूर्णता को दर्शाता है इसलिए ''छह'' *अपूर्णता* या बुराई को दर्शाता है।[31] छह *लगभग* सात ही है, इसलिए ''छह'' का अर्थ छल भी है। अन्ततः ''छह'' का इस्तेमाल विनाश की भविष्यवाणी के लिए किया जाता था। 13:18 में बदनाम ''666'' का अध्ययन करने पर इसे ध्यान में रखें।

प्रकाशितवाक्य में सात की सबसे दिलचस्प व्युत्पत्ति ''$3^1/_2$'' (सात का आधा) है। ''सात'' स पूर्णता के लिए है इसलिए ''$3^1/_2$'' *अपूर्णता* का सुझाव देता है। जैसा कि हम देखेंगे कि प्रकाशितवाक्य में आम तौर पर अंक का स बन्ध परीक्षा, कठिनाई और परख (आगे बेहतर दिन का संकेत देते हुए) है। प्रकाशितवाक्य में ''$3^1/_2$'' को व्यक्त करने के लिए कई ढंगों का इस्तेमाल किया गया है। उदाहरण के लिए, ''42 महीने'' और ''1260 दिन'' ''$3^1/_2$'' वर्ष कहने के वैकल्पिक ढंग हैं। विशेषकर ''एक समय और समयों, और आधे समय'' की बात ध्यान खींचती है। प्रकाशितवाक्य 12 में ''एक हज़ार दो सौ साठ दिन'' (आयत 6) का इस्तेमाल ''एक समय और समयों और आधे समय'' (आयत 14) के साथ अदल-बदल कर किया गया है।[32] ''एक समय और समयों और आधे समय'' ''$3^1/_2$ वर्ष'' कहने का ही दूसरा ढंग है।

इस पाठ के अन्त में आपको प्रकाशितवाक्य में इस्तेमाल किए गए अधिकतर अंकों की सूची मिलेगी।[33] ध्यान से देखें कि ये अंक एक, तीन, चार, और/या दस से कैसे जुड़े हैं। आप को चाहिए कि इस सूची को वहां लटका लें, जहां से प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पढ़ते समय आप देख सकें।

इन पूर्ण अंकों के अलावा, प्रकाशितवाक्य में कुछ भिन्नों का भी इस्तेमाल किया गया है। आम तौर पर इनका अर्थ ''पूरा न होकर एक भाग'' (1/10=एक छोटा भाग, 1/4= कुछ, 1/3=थोड़ा भाग[34]) है। यदि सभी नहीं तो इनमें से अधिकतर भिन्नों का स बन्ध

परमेश्वर के न्यायों के साथ है, जिस कारण जिम मैक्गुइगन ने सुझाव दिया है कि प्रकाशितवाक्य में इस्तेमाल की गई भिन्नें ''कुछ भाग की अदायगी'' के बारे में यह संकेत देते हुए कहती हैं कि ''बाकी बाद में।''[35]

इस भाग को बन्द करने से पहले, मैं प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में अंकों की व्या या करने पर चेतावनियां दे दूं:

(1) अपनी कल्पना को अनियन्त्रित न होने दें। ब्रूस मैज़गर ने सावधान किया है, ''प्रकाशितवाक्य की पुस्तक हमारी *कल्पना* को आकर्षित करने के लिए विलक्षण तो है, परन्तु बिना पैडल के कल्पना नहीं, बल्कि अनुशासित कल्पना को।''[36] सुझाए गए सांकेतिक अर्थ पुराने नियम और अन्य यहूदी लेखों विशेषकर अपोकलिप्टिक साहित्य में इस्तेमाल की गई परीक्षा के परिणाम हैं। इन अवधारणाओं का आविष्कार प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के लिए नहीं हुआ था, बल्कि वे पुस्तक पर अपनी व्या या थोपने की इच्छा करने वाले व्यक्ति की अनियन्त्रित कल्पना का परिणाम नहीं हैं।

(2) इस बात को समझें कि अपोकलिप्टिक साहित्य में अंकों का इस्तेमाल सांकेतिक रूप में करना तन्त्र-मन्त्र वाले अंक शास्त्र जैसा *नहीं* है।[37] जो अंकों के गुप्त अर्थों तथा मानवीय जीवन पर उनके स भावित प्रभाव का अध्ययन है।[38] जे. बी. सेगल ने अवलोकन किया है, ''मिस्र के बड़े पिरामिड का हिसाब लगाने की तरह बाइबल के आंकड़े सनकी और अव्यावहारिक यहां तक कि लापरवाह बुद्धिजीवियों के लिए विनाशकारी आकर्षण होते हैं।''[39] तन्त्र-मन्त्र के अंक शास्त्र का इस्तेमाल भविष्य बताने के माध्यम के रूप में अन्धविश्वासियों द्वारा किया जाता था (और है)। इसे ज्योतिष तथा भविष्यफल बताने वाले अन्य ढंगों की श्रेणी में रखा जाता है,[40] जिसकी बाइबल में निन्दा की गई है (व्यवस्थाविवरण 18:9-13; यशायाह 47:8-15)। इस भाग में दिए गए सरल ठोस संकेतवाद का तन्त्र-मन्त्र के अंक शास्त्र के बेलगाम और बेवजह निष्कर्षों से कोई स बन्ध नहीं है।

पौलुस के कुछ शब्दों से लेते हुए, मैं यह सलाह देता हूं: ''पर मूर्खता और अविद्या के [अंकों पर] विवादों से अलग रह; क्योंकि तू जानता है कि उन से झगड़े होते हैं'' (देखें 2 तीमुथियुस 2:23)।

सारांश

यदि आप अधिक जानकारी से बेहोश होने लगे हैं, तो मैं आपको जल्दी से प्रोत्साहन की कुछ बातें बता दूं:

(1) इस और अगले पाठ की सब बातों की चिंता न करें। बताई गई मु य बातों पर विचार करने के बाद यदि आपको लगे कि आप समझ गए हैं, तो प्रत्येक पाठ के अन्त में दिए गए प्रश्नों का उत्तर दें। उत्तर देते हुए पाठ में दिए गए उत्तरों को रेखांकित कर लें। इससे वे बातें, जिनकी आपको आवश्यकता होगी, एकदम से सामने आ जाएंगी। यह वह जानकारी है, जिससे हमें प्रकाशितवाक्य के पाठ को पढ़ते समय सहायता मिलेगी।

(2) इस तथ्य को थामे रहें कि आपको प्रकाशितवाक्य की बहुत समझ हो या न,

परन्तु परमेश्वर की सहायता से आपको उन मूल सच्चाइयों का पता चल *सकता* है, जो वह चाहता था कि आपको पता होनी चाहिए। जैसे रॉबर्ट माउंस ने ध्यान दिलाया है, ''प्रकाशितवाक्य की मूल सच्चाइयां ... सब के लिए जो पुस्तक को इसके स पूर्ण संदेश के लिए पढ़ेगा, उपलब्ध हैं और छोटी-छोटी बातों से अधिक परेशान होने की परीक्षा से बच जाता है।''[41]

टिप्पणियां

[1]''यहां अजगर *होंगे* '' यह कहने का एक प्राचीन ढंग था कि ''यहां अजगर *हैं*।'' [2]*Sun* को ''सून'' पढ़ा जाता है। [3]यह ''दृष्टांत'' शब्द की तरह ही है, जिसका मूल अर्थ ''जो साथ फैंका गया'' है। [4]*अमेरिकन हैरिटेज इलैक्ट्रॉनिक डिक्शनरी,* तीसरा संस्क. (1992), s.v. ''symbol.'' [5]इसकी जगह कोई ऐसा उदाहरण इस्तेमाल करें, जिसका वहां पर जहां आप रहते हैं, अर्थ हो। अमेरिका के सि बल ''अंकल सैम'' को संसार के कई भागों में पहचाना जाता है। [6]अरल एफ़. पाल्मर, *1, 2, 3 जॉन एण्ड रैवलेशन,* द क युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़, अंक 12 (डैलस: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 102. [7]जिम मैक्युइगन, *द बुक ऑफ़ रैवलेशन,* द लुकिंग इन-टू द बाइबल सीरीज़ (लब्बॉक, टैक्सस: इंटरनैशनल बिबलिकल रिसोर्सेस, 1976), 15. [8]सामान्य नियम तो यह है कि किसी पद को उसी अर्थ में लिया जाना चाहिए, *जब तक इसमें* अस भावना या अस्पष्टता न हो, *जब तक* इसमें विरोधाभास या परस्पर विरोध न हो, *जब तक* इसमें अनैतिक निष्कर्ष न हो, *जब तक* संदर्भ में सांकेतिक इस्तेमाल की मांग न हो, *जब तक* परमेश्वर की प्रेरणा से लिखने वाला यह न कहता हो कि इसमें अलंकार शामिल है या *जब तक* सहजबुद्धि हमें यह न बताए कि सांकेतिक भाषा का इस्तेमाल किया जा रहा है। [9]रेअ समर्स, *वरदी इज द लै ब* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1951), 48. [10]परन्तु कई बार ''व्या या'' को समझना मूल प्रतीक से भी कठिन हो जाता है (13:18; 17:9,10)।

[11]इस पुस्तक में आगे ''हे प्रभु कब तक?'' पाठ में 1:4, 5 पर नोट्स देखें। [12]विलियम हैंड्रिक्सन, *मोर दैन कंकरर्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1994), 58. [13]एक स भावित प्रासंगिकता यह है कि प्रभु की कलीसिया अपने प्रकाश को छिपाए न, सताव के समय भी। [14]समर्स, 50. [15]''झांकी'' एक सजाया हुआ प्रदर्शन या किसी परेड में खींचा या हांका जाने वाला चलते-फिरते मंच पर लगा दृश्य होता है। [16]आपके मन में इस नमूने को बिठाने की कोशिश करने के लिए मैं एक पाठ में, विशेषकर आरं भिक पाठों में कहीं-कहीं इन तीनों पगों पर बात करूंगा। [17]यदि आप वहां रहते हों जहां अध्ययन सामग्री मिल सकती हो, तो हर यूनिटिक्स के सिद्धांतों पर आधारभूत अध्ययन उपयोगी हो सकता है। डी. आर. डंगन (पृष्ठ नहीं; रीप्रिंट, डिलाइट, ऑरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं) की *हर यूनिटिक्स* नामक एक पुरानी उत्कृष्ट पुस्तक है। [18]ह्यूगो मेकोर्ड, *द रॉयल रूट ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्ले: टवंटियथ सैंचुरी क्रिश्चियन, 1976), 8. [19]समर्स, 21. [20]कई ऊंची इमारतों में ''तेरहवीं मंजिल'' नहीं होती, बल्कि वे ''बारहवीं मंजिल'' से उछलकर ''चौदवीं मंजिल'' तक चले जाते हैं। (चंडीगढ़ में सैक्टर तेरह नहीं है। बारह के बाद सीधे चौदह सैक्टर आता है- अनुवादक) ''तेरह'' के अशुभ माने जाने के पीछे एक धारणा यह है कि अन्तिम भोज के समय यहूदा तेरहवां अतिथि था।

[21]चेचक बच्चों को लगने वाली एक बीमारी है, जिससे चेहरे और शरीर पर लाल धब्बे पड़ जाते हैं। [22]''त्रिएकता'' एक लातीनी शब्द है, जिसका अर्थ ''तीन में एक'' है। यह शब्द बाइबल में नहीं मिलता, परन्तु इसमें बाइबल की अवधारणा अवश्य है। [23]होमेर हेली, *रैवलेशन: एन इंट्रोडक्शन एण्ड कमैंट्री* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1979), 43. [24]समर्स 22. [25]प्रकाशितवाक्य में सात वस्तुओं को मिलाने के लिए अक्सर तीन के साथ चार को या चार के साथ तीन को जोड़ा जाता है। [26]''सात'' ऐसा अंक है, जो पूरे पवित्र

शास्त्र में मिलता है (सात दिनों की सृष्टि से आर भ करके)।[27]समर्स, 23. [28]यह शायद दशमलव प्रणाली का अग्रगामी था। ''दस'' अंक के बाइबल के उपयोग का एक प्रसिद्ध उदाहरण दस आज्ञाएं है।[29](सभी समान भुजाओं वाला) स पूर्ण घन स पूर्णता का एक और प्रतीक था (देखें 21:16)। इसलिए ''दस'' अंक का घन (10×10×10 या 1000) स पूर्णता या पूर्णता का पक्का प्रतीक था।[30]एक अंक जो सात से स बन्धित है, परन्तु इस सूची में नहीं मिलता। बाद में 17:11 में इस्तेमाल किया गया क्रमांक ''आठ।'' यह सूची में नहीं दिया गया क्योंकि आयत में कहा गया है कि ''आठ सात से एक अंक अधिक है'' अन्य शब्दों में यह पशु के सात सिरों के बाग के रूप में किसी तरह मिलाया गया। इसलिए ''आठ'' का उस पद में ''सात'' के अर्थ के अलावा कोई सांकेतिक महत्व नहीं लगता।

[31]उस समय के कई यूहदी ''छह'' को वैसे ही मानते थे जैसे आज कई लोग ''तेरह'' के अंक को मानते हैं। (4 और 5 अध्यायों वाले जीवित जन्तुओं के छह पंख यहां ऐसी ही चुनौती को दर्शाते हैं। उन्हें *तीन जोड़े* पंखों के रूप में माना जाना चाहिए।) [32]''समय'' शब्द स्पष्टतया कम से कम बहुअंक अर्थात *दो* बार का पता देता है। [33]हम *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* के लिए तैयार की गई व्या यात्मक सामग्री के लिए NASB का ही इस्तेमाल करते हैं और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अध्ययन में [आवश्यकता पड़ने पर-अनुवादक] भी हम ऐसा ही करेंगे। NASB में प्राचीन भार तथा माप को आधुनिक बना दिया गया है। बाइबल की कई पुस्तकों में यह सहायक है, परन्तु प्रकाशितवाक्य में इससे कुछ आयतों के अंक का संकेत समझ नहीं आता। उदाहरण के लिए NASB में पवित्र नगर को 1,500 मील चौड़ा, ल बा और ऊंचा बताया गया है (21:16) और इस सूची में आपको 1,500 नहीं मिलेगा। KJV, NKJV, ASV, RSV तथा अन्य अनुवादों में आपको यह माप वास्तव में *12,000 फर्लांग* (मूल में, *स्टेडिया*) और हमारी सूची में बारह हज़ार मिलेगा।[34]1/3 की एक और अवधारणा किसी बात को *तीन भागों* में बांटकर उसे कमज़ोर बनाना है।[35]मैक्यूगन, 163. यह असामान्य नहीं है, उद्धार खरीदने पर ''दसवां भाग,'' ''चौथा भाग'' या ''तीसरा भाग'' देना पड़ता है।[36]ब्रूस एन. मैज़गर, *ब्रेकिंग द कोडः अंडरस्टैंडिंग द बुक ऑफ़ रैवलेशन* (नैशविल्लेः अबिंग्डन प्रैस, 1993), 11. [37]अंक विज्ञान शब्द का मूल अर्थ ''अंकों का अध्ययन है'' और अपने आप में इसमें कोई बुराई नहीं है। परन्तु इसे अधिकतर लोग *रहस्यवाद* या जादू-टोने में इस्तेमाल किए जाने वाले अंकों में करते हैं, इसलिए प्रकाशितवाक्य में अंकों के सांकेतिक इस्तेमाल के अर्थ से बचना ही बेहतर है।[38]*अमेरिकन हैरिटेज इलैक्ट्रॉनिक डिक्शनरी,* तीसरा संस्क. (1992), s.v., ''न्यूमरोलोजी।'' पूरी बाइबल में इन पुस्तकों में रहस्यवाद या जादू-टोने में अंकों के अर्थ ढूंढ़ने के प्रयास की चर्चाएं मिल सकती हैं: अरल एफ़. पार्लमर, *1, 2, 3 जॉन एण्ड रैवलेशन,* द क युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़, अंक 12 (डैलस: वर्ड पब्लिशिंग, 1982) 108-9 एण्ड जॉन जे. डेविस, *बिबियुकल निमरोलोजी* (ग्रैंड रैपिड्स,मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1968), 125-49. अपनी ल बी चर्चा के अंत में, डेविस ने कहा, ''बाइबल के अंकों की वकालत करने वालों द्वारा सुझाए गए दावों और ढंगों का सावधानी पूर्वक विश्लेषण करने के बाद हमारा निष्कर्ष यह है कि पूरी प्रणाली को ही वचन की व्या या के मान्य सिद्धांत के रूप में नकार देना चाहिए'' (पृष्ठ 148)।[39]जे. बी. सेगल, ''न्यूमरलस इन द ओल्ड टैस्टामेंट,'' *जरनल ऑफ़ सैमैटिक स्टडीज* (स्प्रिंग 1965) 10:2. [40]*ग्रोलियर मल्टीमीडिया इन्साइक्लोपीडिया* (1995), s.v. ''फॉरचून टैलिंग'' बाय बैंजामिन माकर।

[41]रॉबर्ट माउंस, नोट्स ऑन द बुक ऑफ़ रैवलेशन, *द NIV स्टडी बाइबल,* सामा. संस्क., कैनथ बकर (ग्रैंड रैपिडस, मिशिगनः ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 1924.

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. क्या प्रकाशितवाक्य में दिए गए चिह्न आपको डराते हैं ?
2. क्या प्रकाशितवाक्य के मूल संदेशों को समझने के लिए इसकी हर बात को समझना आवश्यक है ?
3. ''संकेत'' शब्द का क्या अर्थ है ? क्या आप पाठ में दिए गए संकेतों के अलावा किसी और उदाहरण पर विचार कर सकते हैं ?
4. पाठ के अनुसार प्रकाशितवाक्य को समझने के लिए सबसे महत्वपूर्ण किस सिद्धांत पर ध्यान दिया जाना चाहिए ?
5. प्रतीकात्मक भाषा की व्या या के लिए दो विशेष सिद्धांत क्या दिए गए थे ? उन पर चर्चा करें।
6. क्या दर्शन में दी गई हर बात का महत्व है ? कई बातों का उद्देश्य क्या है ?
7. पाठ में बाइबल की व्या या के कौन से तीन सामान्य सिद्धांत दिए गए थे ? उन पर चर्चा करें।
8. किसी विशेष संकेत का अर्थ जानना अस भव होने पर क्या किया जाना चाहिए ?
9. प्रकाशितवाक्य में चार सबसे प्रसिद्ध संकेतों के प्रकार कौन से हैं ?
10. बाइबल के समयों में क्या अंकों का मूल अर्थ इस्तेमाल किया जाता था ?
11. पाठ के अनुसार प्रकाशितावक्य के अधिकतर अंक किन तीन अंकों से लिए गए हैं ?
12. स पूर्णता दिखाने के लिए किन मूल अंकों का इस्तेमाल किया जाता है ?
13. पाठ में ''666'' का सांकेतिक महत्व क्या बताया गया है ?
14. ''1,000'' का सांकेतिक महत्व क्या है ?
15. ''1,44,000'' में क्या सांकेतिक महत्व देखा जा सकता है ?

प्रकाशितवाक्य में प्रयुक्त सांकेतिक अंक

1 = एक इकाई (केवल एक)
2 (1 + 1) = दृढ़
3 = ईश्वरीय अंक
3½ (7 का आधा) = अधूरा (42 महीने; 1,260 दिन; ''एक समय और समयों, और आधा समय'' = परीक्षा का 3½ वर्ष का समय, भविष्य की आशा देते हुए)
4 = सृष्टि का अंक (वैश्विक अंक, मनुष्य जाति)
5 (10 का आधा) = सीमित सामर्थ
6 (7 − 1) = अपूर्ण (दुष्ट, छल, असफलता)
7 (3 + 4) = पूर्णता (पवित्र स पूर्णता)
10 = मानवीय स पूर्णता (परिपूर्णता या सामर्थ)
12 (3 × 4) = धार्मिक स पूर्णता
24 (2 × 12) = धार्मिक स पूर्णता का बढ़ना
40 (4 × 10) = मानवीय स्तर पर स पूर्णता
42 (देखें 3½)
144 (12 × 12) = धार्मिक स पूर्णता की स पूर्णता
666 (देखें 6) = अपूर्णता, दुष्ट, छल और असफलता का बढ़ना
1,000 (10 × 10 × 10) = स पूर्णता की स पूर्णता की स पूर्णता
1,260 (देखें 3½)
1,600 (4 × 4 × 10 × 10) = मानवीय स्तर पर पूर्णता
7,000 (7 × 1,000) = स पूर्णता का बढ़ना
12,000 (12 × 1,000) = स पूर्णता का बढ़ना
1,44,000 (144 × 1,000) = स पूर्णता का बढ़ना
20,00,00,000 (2 × कई 10) = अजेय सामर्थ
1,00,00,00,000 और अधिक = असं य, मानवीय समझ से परे